मौज

सतसंग

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

आज एक सत्संगी का पत्र आया है। उस सज्जन ने स्वामी बाग आगरा के किसी महात्मा से अधिक समय हुआ, नाम दान लिया हुआ है। उसने लिखा है कि स्वामी जी की वाणी में अंकित है कि नामदान जब तक समय के संत सत्गुरु से नहीं लिया जायेगा तब तक काम नहीं बनेगा। आदि आदि। चूँकि वह दशहरे के सत्संग में मुझे देहली मिला था। इसलिए, जो कुछ आदेश मैंने उसे दिया उस पर चलने से उसे सफलता हुई। उसने लिखा है कि वह मुझसे नामदान लेना चाहता है। ऐसे ही और भी अनेक सज्जनों के पत्र आये थे।

आज विचार हुआ कि इस समय के संत सतगुरु के सम्बन्ध में अपना निज अनुभव वर्णन कर जाऊँ। इस प्रकार के भ्रम, सन्देह और संसय में स्वयं भी ग्रस्त रहा हूं। मुझे अपना वृतान्त याद आता है। मैंने हुजूर दाता दयाल महर्षि जी महाराज से सन् १९०५ में नामदान लिया था। और उ होंने कहा था कि राधा स्वामी मत के सतसंगों में जाया करो। मैं जब मलकोवाल स्टेशन पर था तो वहाँ सरकार साहब आगरा के क्षेत्र वालों का सत्संग हुआ करता था। मैं भी कभी-कभी जाया करता था। वहां इन सत्संगियों ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। और मुझसे कहा कि मालिक की धार सरकार साहब के चोले में आयी हुई है। तुम काल मत में हो आदि आदि। चूँकि मैं भक्ति मार्ग के विचार वाला था और मैं इस भक्ति की भावना के अन्तर्गत मौज से दाता दयाल के चरणों में गया था। वहाँ उन्होंने मुझे राधास्वामी मत के अनुसार दीक्षित किया था।

इसलिए इनकी बातें सुनकर मेरे मन को अत्यन्त दु:ख हुआ। कि तु मैंने सोचा मालिक सबका है। मैंने उस समय अत्यन्त दु:ख सहकर रो-रोकर एक पत्र भक्तिभाव से, भावना के अन्तर्गत मालिक को लिखा कि हे मालिक ! तूने मुझे अपना दर्शन दातादयाल के रूप में दिया। यदि तू सचमुच सरकार साहब के रूप में है तो मुझको उत्तर दे जिससे कि मैं सीधे मार्ग पर आ जाऊँ। इस प्रकार का पत्र चार पृष्ठों का लिखकर अपनी उनमत्ता में बन्द करके लिफाफे पर मालिके कुल द्वारा सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न आदि लिखकर उनको दे दिया। और कहा कि यह पत्र अपने मालिक समय के सतगुरु के पास भेज दो। जो भी उत्तर वहाँ से आयेगा मुझे स्वीकार होगा।

नोट—अब मेरी दशा और है। यह वर्षों की बात है। १५ दिन के पश्चात् वे सतसंगी मिले और मेरे प्रश्न पर उन्होंने कहा कि सरकार साहब का चोला छूट गया है। अब जब दूसरा सतगुरु आयेगा तो उत्तर मिलेगा। उस समय से मुझे सन्तुष्टी हो गयी और मैंने दातादयाल को समस्त जीवन नहीं छोड़ा।

अब मैंने इस रहस्य और सार भेद को पा लिया है और राधा स्वामी मत की वास्तविक और सच्ची शिक्षा का पूर्णरूपेण आदर्श हूं। इसलिए कहता हूं :—

अरे दीवाने इन्सानो ! तुम भूल गये भ्रम में पड़ गये।
तुम्हरे हित के लिए हम संसार में प्रगट हुए ।।
गुरु नाम है ज्ञान का, जो भ्रम मिटावे।
गुरु वो नहीं संसार में जो अपनी पूजा करावे ।।
धन दौलत और मठ के लिए, जग गुरु है बनता।
गुरु है वो जात पाक, जो संशय दूर करावे ।।
गुरु है वो जो, इन्सान को इन्सान बनावे।
काल माया के चक्कर से काढ़, रूप अपना सुझावे ।।

गुरु है वो जिसके ध्यान से, मन शान्त हो जावे।
गुरु है वो जो इन्सान को, सार भेद बतलावे॥

अपने जीवन का अनुभव सम्मुख है। शिष्य बनकर भी देख लिया और गुरु बनके भी देख लिया। इसलिए :—

गो मैं समझता हूं बुद्धि इन्सान समझ सकती नहीं।
जब तक न हो दया किसी कामिल की, सुलझ सकती नहीं॥
मुझको जब बर्षों लगे, कैसे मानूँ में दोस्तो।
कैसे कोई राज पाये, यह मुअम्मा हल कर सकती नहीं॥

मैंने जिस प्रकार समस्त आयु में खोज की है यदि आज मुझे राधास्वामी मत अथवा सन्त कबीर के मार्ग की शिक्षा में सत्यता अथवा वास्तविकता न मिलती तो मैं निर्भय होकर इस राधास्वामी मत अथवा सन्त कबीर का खण्डन कर जाता।

यह मत केवल गुरु भक्ति अथवा नाम भक्ति के सहारे समस्त जीवन की उलझनों को स्वच्छ करता हुआ परमशान्ती निर्भ्रान्ति की श्रेणी तक पहुँचा देता है।

चूँकि मैं इसी उपाय से परम पद, परम शान्ती अथवा जीवन मुक्त अवस्था को पहुंचा हूं इसलिए मानव का सच्चा कल्याण इसी बात में है। किन्तु वो गुरु भक्ति केवल फूल माला, भेंट चढ़ावा अथवा मत्थे टेकना ही नहीं है। और न केवल कान बन्द करके साधन करना ही है। इन दोनों कामों से मानसिक आनन्द अवश्य मिलता है। इससे इन्कार नहीं है। अब सोचो ! मानव का वास्तविक और सच्चा कल्याण किस बात में है ?

सुरत का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोध भानों से निकलकर अपनी जात अपने निज स्वरूप से मिलकर अपने आप से एक हो जाना है। दूसरे शब्दों में हमारी सुरत के सम्बन्ध जो शरीर मन और आत्मा से हैं, इन को इन सम्बन्धों में न फंसने देना है।

इसका दूसरा नाम जीवन मुक्ति अथवा विदेहगति है। किन्तु :—

इस अवस्था को प्राप्त करने के लिये साधन और किसी पूरन पुरुष का जो स्वयं ऐसा हो उनका सत्सग और रेडीयेशन लेना है।

नाम प्रारम्भिक अवस्था में जहाँ से इच्छा हो, विश्वास हो लेलो। साधन करना आरम्भ करदो किन्तु अन्तिम पर्दा जब खुलेगा किसी पूरन पुरुष की दया से खुलेगा। वह दया क्या है? वह अपने हित, मत और रहनी से तुमको एक प्रकार का द्रढ़ विश्वास करा देगा। वह कैसे करायेगा? यह वो जानता है।

प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति व दशा भिन्न भिन्न होती है। एक ही उपाय सबके लिये लागू नहीं है।

मैं यह लेख अपने हृदय से निष्कपट और निष्काम होकर लिख रहा हूं। अनेक व्यक्तियों को काफी देर लगती है और अनेक सज्जनों को शीघ्र ही सक्षात्कार हो जाता है मुझे देर लगी।

इन आन्तरिक साधनों से पार होने के लिये गुरु भली भाँति जानता है कि क्या उपाय किया जाय?

मेरा मन चंचल था। दाता दयाल ने मेरे साथ अनेक प्रकार के खेल खेले किस प्रकार वर्णन करूँ कि उन्होंने कैसे कैसे कष्ट मेरे लिये सहन किये। जब पिछली बातें याद आती हैं, तो अपनी अज्ञानता पर खेद करता हूँ।

औगुन हारा गुन नहीं, मन का बड़ा कठोर।
हे समरथ दाता सतगुरु, तुम बने बन्दी छोर॥

हे सत्संगियो! शान्ती और कल्याण के इच्छुको! "गुरु खोजो रे जग में दुर्लभ रत्न यही।" कैसे खोज करो? सच्चे बनकर तीव्र इच्छा करो कि तुम्हारा कल्याण हो। सामग्री स्वयं उत्पन्न हो जायेगी। जहाँ मानव के भीतर सच्ची तड़फ उत्पन्न हुई सामान स्वयं उत्पन्न हो जाते हैं। यह मेरा अनुभव है। मुझे इस सन्तमत अथवा

राधास्वामी मत का कोई पता नहीं था। एक तीव्र इच्छा थी, वो मुझे वहाँ ले गयी जहाँ उसकी पूर्ती हो गयी। तीव्र इच्छा नहीं है तो ऐसे पुरुषों का सत्संग करो जो गुरुमुख हैं अर्थात तीव्र इच्छा वाले हैं।

"कर प्रेमी जन का सङ्ग, तेरा नर जन्म बने।"

लून की खान में बस्तु पड़े जब, लून सहज हो जावे।
प्रेमी जन का सङ्ग करे जो, प्रेम प्रीति गति पावे॥

पत्थर लोहा जल में बूड़े, काठ का बेडा तरे।
लदे लोह पत्थर जब बेड़ा, नीर के ऊपर है रे॥

सङ्गत कर उत्तम सज्जन की, सज्जनता चित आवे।
पड़े असज्जन की जो सङ्गत वृथा जन्म गँबावे॥

तोता मैना भक्त के घर में, राम नाम नित गाते।
वही अभक्त असाध की सङ्गत, अनुचित बैन सुनाते॥

यह विचार कर सङ्ग गुरु का, गुरु गम ले पहिचानी।
राधास्वामी की शहनाई होजा ज्ञानी ध्यानी॥

अब रहा प्रश्न कि वह क्या वस्तु है जो मानव की उस आन्तरिक कुरेद को मिटाती है ? मैं जो कुछ कहता हूं वह मेरा अनुभव है। इस वर्तमान दशा में जो परमशा ती मुझे प्राप्त है वह किसने दिलाई ? वह अनुभव ने दिलाई। अपनी ही समझ, विवेक और ज्ञान ने दिलाई इस अनुभव, ज्ञान विवेक सार, भेद के दिलाने वाली दाता दयाल महर्षि जी महाराज की पवित्र पुनीत विभूत है। मैं भूला हुआ था भ्रम और अज्ञान में था उ होंने मेरे अज्ञान और भ्रम को दूर किया "सन्त उठावें जीवन भार"।

उन्होंने मेरी, जैसे माता पिता छोटे बच्चों की संभाल करते हैं ऐसे की। जो कुछ समझाना चाहते थे वह मैं समझ नहीं सकता था यद्यपि मेरा उनमें अत्यन्त विश्वास और प्रेम था। उन्होंने दया करके आचार्य पदवी देकर मेरे इस अज्ञान और भ्रम की गुत्थी को सुलझा दिया। अब निश्चय हो गया :—

अपने उरझे उरझियाँ, उरझा सब संसार।
अपने सुरझे सुरझियाँ, यह गुरु ज्ञान विचार॥

वाह्य गुरु यदि कोई सहायता कर सकता है तो हित और मत देकर अपनी रहनी और अपने क्रियात्मिक जीवन का उदाहरण सत्यता पूर्वक देकर तुम्हारे भीतर सत्य प्रकाश और सत्य ज्ञान उत्पन्न करा देगा।

संसार के व्यक्ति भ्रम, अज्ञान वश किसी को गुरु मानकर उसकी मानप्रतिष्ठा करते हैं और उसके नाम का ढिंढोरा पीटते हैं।

आज एक पत्र थानेश्वर से किसी फल वाले का आया है। वह लिखता है कि महाराज मैं आपके पास मई या जून के महीने में अपनी स्त्री सहित सतसङ्ग में गया था। मुझे सन्तान की इच्छा थी आपने आम का प्रसाद देते हुए कहा था कि विश्वास रक्खो, तुम्हारे यहाँ पुत्र उत्पन्न होगा। आपकी दया से ९-१-६३ को मेरे यहाँ क सुन्दर बालक का जन्म हुआ है। अब ऐसे व्यक्ति मुझे गुरु ही प्रसिद्ध करेंगे। यद्यपि यह गुरुमत नहीं। यह उसका विश्वास था।

आज होशियारपुर में एक जो मजूरी करता है, वह मिला। कहने लगा, महाराज जी! कल दिन के समय आप मेरे पास आये और आध घन्टे तक सतसंग कराते रहे। साथ ही उसने कहा कि १७-१२-६२ के सतसंग से चार दिन पूर्व मैंने आपका १७ तारीख का सतसंग सुना था और जो कुछ मैंने सुना था वही आपने उस दिन कहा।

ऐसी और भी घटनायें हैं जिनका उल्लेख मैं करता रहता हूं। संसार वालो! तुम विश्वास करो अथवा न करो में शपथ पूर्वक कहता हूं कि मुझे इन बातों का कोई पता नहीं होता। इससे सिद्ध हुआ कि यह समस्त खेल मानव के अपने ही मन, उसकी एकाग्रता, उसका विश्वास और श्रद्धा है आप-आप को आप पहिचानों। कहा और का नेक न मानो)

राधास्वामी मत, अथवा संत कबीर का मत मानवीय सुरत को इस काल और माया से निकालने की युक्ति, मंत्र और उपाय बताता है, जिससे कि मानव इस आवागमन के चक्र से निकल सके।

चूँकि यह सत्यता की शिक्षा कहीं नहीं है। सबगद्दियों, गुरुओं अथवा धर्मों और पंथों ने जीवों को अज्ञान, और भ्रम में फँसाया हुआ है और उनको अपने पीछे त्रुटिपूर्ण ढंग से लगाया हुआ है। इसलिये संतसत्गुरु केवल वह एक पवित्र पुनीति विभूति है जिसका अन्तर और बाहर एक समान है। और वह किसी धर्म, पन्थ के बन्धन में नहीं है और निर्पक्ष, निर्मोह और द्वन्द रहित है, स्वामी और सेवक पने से मुक्त है।

आप सज्जनों को अधिकार है कि मुझे भला कहो, अहङ्कारी कहो जो मन में आये कहो। मुझे तो एक कर्त्तव्य के पालन करने को कहा गया था उसको पूरा किये जा रहा हूं।

समय के सन्त सत्गुरु संसार में कभी-कभी प्रगट हुआ करते हैं। वह जबकि संसार में अशान्ति, कष्ट, क्लेश, भ्रम और दुखों के बादल छा हुये होते हैं। वह आकर शिक्षा में परिवर्तन कर जाते हैं। समय-समय पर उनका प्रकट न होता है और एक विचार छोड़ जाते हैं। उस विचार की धार फैलती है। उदाहनणतया सत्त कबीर, गुरु नानक और राधास्वामी दयाल आदि आदि।

मैं किसी रीति रिवाज के अनुसार नामदान नहीं देता। मैंने समझ लिया है कि वास्तविकता और सत्यता क्या है? इसलिए मेरा सतसंग ही वास्तविक नाम दान है "मूल मंत्रम् गुरु वाक्यम्"। यह नाम दान तो आज कल अपना क्षेत्र और संख्या बढ़ाने के लिये है।

बन्धन कटे निर्बन्ध हुआ, यह जिन्दगी का अंजाम है।
हुक्म दाता और सांवलेशाह के यह मेरा काम है॥
जिसका जी चाहे सुने, जिसका जी चाहे न सुने।
सेवक हूं मैं सेवा करना, असली मेरा काम है॥

नोट—सन्त मत के अनुयाई सम्भवतः मुझे पथ भ्रष्ट समझें। मैं उनका ध्यान स्वामी जी की वाणी की ओर दिलाता हूं।

गुरु चेला व्यवहार जगत में, झूठा वरत रहा।
कासे कहूँ खोज नहीं काहूँ, धोखे धार बहा॥
गुरु तो लोभ प्रतिष्ठा चाहत शिष्य स्वारथ संग आन बँधा।
सच्चा मारग सुरत शब्द का, सो अब गुप्त भया॥
गुरु चेला पाखण्डी कपटी, चौरासी में दोऊ गया।
शब्द स्वरूपी शब्द अभ्यासी, अस गुरु मिले तो पार हुआ।
सुरतवन्त अनुरागी सच्चा, ऐसा चेला नाम कहा।
गुरु भी दुर्लभ चेला दुर्लभ, कहीं मौज से मेल मिला॥
शब्द सुरत बिन जो गुरु होई, ताको छोड़ो पाप कटा।
राधास्वामी यों कह गाई, बूझ बचन तब काज सरा॥

———

R. S.

ओ३म पूर्णमद पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्णमदुच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३७	दिसम्बर १९८८	अङ्क ३

प्रार्थना

तुम्ही हो माता पिता तुम्हीं हो। तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो ॥
तुम्हीं हो साथी तुम्ही सहारे। कोई न अपना सिवा तुम्हारे ॥
तुम्ही हो नैया तुम्ही खिवैया। तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ॥
जो खिल सकें ना वो फूल हम हैं। तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं ॥
दया की दृष्टि सदा ही रखना। तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ॥
तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो। तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ॥
परमसंत अवतार धर करके आये। परमदयाल सतगुरु जगमें कहाये ॥
दुखी जीवों को अङ्ग अपने लगाये। तुम्ही संत सत्गुरु समयके कहाये॥
हमारी इस वाटिका के हो माली हम नन्हे नन्हे बच्चों के वाली ॥
हम भी आज हैं बड़े भाग्यशाली। तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ॥
तुम्हें देखकर नहीं फूले समाते। तुम्हारे शुभागमन में यह गीत गाते ॥
माता पिता के हमारे हैं नाते। तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो ॥

मौज

(गतांक पृष्ठ २८ से आगे)

सत्त कबीर वर्णन कर गये:-गुरु तुम्हारा कहाँ है, चेला कहाँ रहा।

क्योंकर के मिलना भया, कैसे आवे जाय ।।
गुरु हमारा गगन में, चेला है घट माहि।
सुरत शब्द मेला भया, मुखकी हाजत नाहि ।।

वाह्य पूर्ण पुरुष मानव को दृढ़ विश्वास करा देता है कि हे मानव गुरु भी तेरे अन्तर है और चेला भी। और मालिक परमात्मा सब कुछ तेरे अन्तर है जो ऐसा वाह्य महापुरुष तुम को जो यह निश्चय करा दे उसको गुरु कहते हैं। इसलिए ऐसे महापुरुष की संगत और उसके सत्संग की आवश्यकता है। मानव स्वयं पूर्ण है। उस परम तत्व का अंश है। समस्त रचना और प्रकृति गुण उसके भीतर ओत प्रोत हैं। केवल उनका अनुभव करके अपने आप में स्थिर हो जाना ही गुरु मत है। इस प्रकार लिखने के पश्चात किसी को शङ्का और सन्देह नहीं होना चाहिये। जो समझा अनुभव किया लिख दिया। मानो तो वाह वाह, न मानो तो वाह वाह।

।। शब्द ।।

बहा सतसंग का दरिया, न्हालो जिसका जी चाहे।
जिगर से दाग पातक के, छुड़ालो जिसका जी चाहे ।।
न ऐसा और है तीरथ, जगत में दूसरा न कोई।
गया हरिद्वार जाकर, आजमालो जिसका जी चाहे ।।
ऋषि मुनियों ने भी गाई, बहुत कुछ इसकी जो महिमा।
लिखी वह पोथियी में है, पढ़ालो जिसका जी चाहे ।।
नहीं इसमें जरा शक भी, जो फल सन्तों ने फरमाया।
काग से हंस अपने को, बनालो जिसका जी चाहे ।।

हजारों रत्न बेकीमत, भरे आला से आला हैं।
जरा इसमें लगा गोता, उठालो जिसका जी चाहे ।।
दया और मेहर सगगुरु के, बिना कुछ भी नीं हासिल।
फन्द काल और माया के, कटालो जिसका जी चाहे ।।
दुखों से मुक्ति चाहते हो, तो तुम धर्मदास सतगुरु के।
शरण आ काल से तिनका, छुड़ालो जिसका जी चाहे ।।

गज़ल पीरमुगां साहब

जो फँसे दुनियाँ में आकर, ख्वाहिशों के दाम में।
मुब्तला बेचारे हैं, नाहक गमो आलाम में ।।
फ़िक्र किसकी, रंज किसका, गम किसी का क्यों करें।
होने वाला आप हो जायेगा, सुबह ओ शाम में ।।
नाम से कोई दुखी है, नङ्गों से कोई दुखी।
क्या धरा है देखो तुम, दुनियाँ के नङ्गों नाम में ।।
जिस्म फानी, दिल है फानी, रूह फानी है अजीज।
यह समझ आई तो हम हैं, राहतो आराम में ।।
हक़ की जानिब हो नज़र, परदा हकीक़त का उठे।
दिल न फँसने पाये हरगिज़, देखना ओहाम में ।।

नोट – सन्तों के मार्ग में रुह (आत्मा)को भी फानी (नाशवान) कहा गया है।

शब्द दाता दयाल

(प्रे० ठा० पदमसिंह)

जगत जिसका यह कुल, बनाया हुआ है।
वही सब घटों में, समाया हुआ है ।।
नहीं दूसरा कोई, है उससे न्यारा।
वह अपने में आप ही, भुलाया हुआ है ।।
हरइक शै जो होगी, वह रङ्गों बिरङ्गी।

यह जलवा उसी का, दिखाया हुआ है ।।
उसी की अकल में, यह आती हैं बातें ।
शरण सतगुरु की, जो आया हुआ है ।।
उसी में है ताकत, जबाँ खोलने की ।
जो कुछ भेद सन्तों से, पाया हुआ है ।।
विना सन्त के कोई, समझ भी कैसे ।
सन्तों के अनुभव में, आया हुआ है ।।
धर्म दास अपनी, उसी की तड़प में ।
करोड़ों की दौलत, लूटाया हुआ है ।।

गज़ल महिमा फकीर "राज" इयलासी

मद रश्क आफतब है, सूरत फकीर की ।
मखजन है करिश्मात का, सीरत फकीर की ।।
था हलकये अनवार में, वह नूर मुजस्सिम ।
हैरत फिजा थी ख्वाब में सूरत फकीर की ।।
झुकते हैं शहन्शाह भी, ताजीम को उसकी ।
बालाऐ कुदसियात है, अजमत फकीर की ।
जागीर में उसकी है, कुल आलम की कायनात ।
मालिक है कुल का, कुल पै हकूमत फकीर की ।।
आसां है शहन्शाह की, मिलना मुसाहिबी ।
मिलती है मुकद्दर से ही, कुर्बत फकीर की ।।
ख्वाहिश न मालो जर की, न फाकों का कोई गम ।
मशहूर है जहाँ में, कनाअत फकीर की ।।
लेता है किसी से कुछ न वह, 'दाता' जहान का ।
बेलौस बे गरज है, मुहब्बत फकीर की ।।
जो चाहे आके, दामने मकसूद को भर ले ।
वक्फे रिफाए आम है, दौलत फकीर की ।।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

दिल में भरा है, दर्द के मारों का दर्दी गम।
बहरे करम नवाज है, फितरत फकीर की ।।
दुख का न कोई गम है, न सुख की कोई खुशी।
यकसाँ है हरइक हाल में, हालत फकीर की ।।
सरसब्ज उसकी मौज से है, गुलशने अमल।
हर गुल के पैरहन में है, नखत फकीर की ।।
मायूस आज तक, कोई दर से नहीं गया।
देखे जो आके कोई, सखावत फकीर की ।।
चाहे वह खुदाम को, मखदूम बना दे।
कितनी उरूज बख्श है खिदमत फकीर की ।।
कट जायें जन्माजन्म के, उसके तमाम फन्द।
हो जाय जिसपै, नजरे इनायत फकीर की ।।
'पीरे करम' नवाज है, सत्गुरु 'परम दयाल'।
इक बहरे बेकराँ है, हकीकत फकीर की ।।
'इन्साँ बनो' का हाथ में, झण्डा लिए हुए।
है वज्मे इत्तहाद में, शिकरत फकीर की ।।
अम्लों शगल से जाती, तजुर्बात का 'धनी'।
हर शब्द से अयाँ है, सदाकत फकीर की ।।
तालीम की इस्लाह को, भेजा है मौज ने।
है दौरे हाजिरा में, जरूरत फकीर की ।।
थे बदतरे हैवान, वो इन्सान बन गये।
तसलीम की जिन्होंने, नसीहत फकीर की ।।
इन्सानियत ही कर्म है, इन्सानियत ही धर्म।
इन्सान मुकम्मिल हैं, बदौलत फकीर की ।।
बे खौफ हैं, घबराते नहीं वक्ते मुसीबत।
करते हैं जो कबूल, इताअत फकीर की ।।

रहती हैं उन से दूर, जमाने की बलायें।
करते हैं सिदक दिल से जो खिदमत फकीर की।।
वह दौरे जिन्दगी में, बड़ा खुश नसीब है।
जिसको कि हो नसीब जियारत फकीर की।।
तौसीफ को अलफाज का, मिलना मुहाल है।
फिर कैसे कलम बन्द हो, मदहत फकीर की।।
दरअस्ल हैं वह "राज" हकीकत से आश्ना।
होती जिन्हें नसीब है, सङ्गत फकीर की।।

परम दयाल जी के सतसङ्गों का सारांश

शिवरात्रि पर दयालधाम, दयाल नगर, अलीगढ़ में

फकीर की महिमा और महत्व के सम्बन्ध में आज एक प्रेमी सज्जन "राज" की गजल लिखी हुई प्राप्त हुई। पढ़ी :-

कुदरत ने बनाया है, फकीरी, की करी कमाई।
कहे जाता हूँ क्या है फकीरी, क्या उसकी बड़ाई।।
नहीं अलफाज खुशामद के, अब मुझे खींच सकते।
मैं रहा हूं बचपन से, हकीकत का शैदाई।।

मित्रो ! जब ब्राह्मण का युग था तो ब्राह्मणों की प्रशंसा और बड़ाई के लोगों ने पुल बाँधे। फिर जब सन्यासियों का युग आया तो उनकी मान प्रतिष्ठा के गीत गाये गये। ऐसे ही जनी और बौद्धों के युग में हुआ। सूफियों ने सुफियों को आकाश मंडल पर चढ़ाया। ईसाइयों ने ईसा मसीह को स्वर्ग दिलाने वाला कह कर उसके गुण गाये। अब सन्तों अथवा फकीरों का युग आया तो सन्त, साधु अथवा फकीरों के राग गाये गये।

दाता दयालजी की पवित्र पुनीत विभूति ने मुझे फकीर बनने का आदेश दिया। एक शब्द जो मेरे नाम है प्रेषित करता हूं :—

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी।
साधु कहें फकीर को भाई साधू जग सुख दानी॥
पर उपकारी जग हितकारी गुरु के आज्ञाकारी।
अवगुण त्यागी गुण के ग्राही दया भाव चितधारी।
निज चित सोधें मन परबोधे, जीव दोष नहीं द्रष्टि।
अपने भाव में वरतें निसदिन, करें दया की वृष्टि॥
माह मया और छल चतुराई, छोड़ें मूल विकारा।
परहित लागी सहज बिरागी, ज्ञान बुद्धि भण्डारा॥
दुख क्लेश सब अपने सिर पर, जीव का करें सुधारा।
भव दुख भंजन काम निकन्दन, यम से दें छुटकारा॥
धर कपास की गति विमल चित, निरस विशुद्ध कहावें।
सहें विपत्ति कठिनाई जग की, और का दोष छिपावें॥
सरल सुभाव रहें जग माँहीं, अपना रूप संभारें।
औरन के अवगुन नहि देखें, दया का मरम विचारें॥
सुख देवें दुख हर निरन्तर, क्षमा करें अपराध।
हँसी खुशी आनन्द परम गति, अगम अलेख अबाधा॥
नाम फकीर धराया तूने, हो फकीर अब साँचा।
जसा नाम तो गुन भी वैसा, मन कर्म सहित सुदाचा॥
है फकीर का नाम प्यारा, मैं फकीर का दासा।
तन मन धन फकीर पर वारूँ, वसूँ सुसंग मुबासा॥
कठिन नाम है कठिन काम है, कठिन फकीर कमाई।
जग के भव दुख नासें पल में, जब फकीर जग आई॥
जो फकीर मोहि दर्शन देवे, अपना भाग सराहूँ।
अपने तन के चाम की जूती, पग फकीर पहिनाऊँ॥

मैं नहिं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूँ ।
मैं फकीर का नाम दिबानौ, सबसे बढ़कर मानूँ ।।
मेरे साध हैं शब्द विवेकी, संत वश कुल शोभा ।
चरन कमल मस्तक पर धारूँ, प्रेम मगन मन छोभा ।।
मेरी नजर में साधु फकीरा, सत चित आनन्द रासी ।
एक घड़ी साधु की संगत, कटे मोह यम फाँसी ।।
जो फकीर का दर्शन पाऊँ, चरन सरोज पखारूँ ।
आप तरूँ उसकी शरनाई, औरों को संग तारूँ ।।
साधु की संगत गुरू की सेवा, सहजहि काम बनावे ।
जिस पर साधु की दृष्टि पड़ गई, फिर जग योनि न आवे ।।

तरुवर सरबर मेघ का पानी, औरत को सुखकारी ।
तैसे ही सुन मेरे फकीरा, साधू पर उपकारी ।।
तू फकीर बन, तू फकीर बन, तू फकीर बन भाई ।
मैं भी तरूँ फकीत चरन लग, ऐ फकीर ! सुखदाई ।।
सुनले कथा सुनाऊँ तुझको, प्रगटे विमल विवेका ।
जीव अनेक रहें जग भीतर, पर फकीर कोई एका ।।

अब देखो ! इस शब्द में दाता दयाल ने फकीर की किस प्रकार महिमा गाई है । मैं नाक कटों में सम्मिलित नहीं हुआ । अपने सत्संगों में केने फकीर की यथार्थ महिमा पर अपने विचारों को व्यक्त किया था और प्रिय देवीचरन को कह आया था कि "शिव" पत्रिका में उनको प्रकाशित कर देना । संक्षेप में यहाँ वर्णन करता हूं कि मुझे यहाँ जो कुछ मिला वह कहता हूँ । मुझे भवसागर के जाल से छुटकारा मिल गया ।

मेरे नाम एक दूसरे शब्द में कड़ी आयो है:—

तू इराक से अबके आया, सत संगत के कारन ।
ले परशाद सत संगत का तू, होजा भवनिधि तारन ।।

औरों को क्या कहूँ मैं स्वयं इस मन के चक्र में रहा हूँ दाता दयाल की अपार दया से इस मन का रूप समझ में आ गया और मैं अब इसमें नहीं फँसता हूं। यह मुझे मिला और मैंने अपने जीवन पर्यन्त कर्तव्य को पालन करने के लिये जो कुछ सचाई से कर सकता था किया। और जन साधारण की बुद्धि निर्मल करने और भ्रम संशय और संदेहों को दूर करने के लिये आवश्यकता से अधिक कार्य किया है।

मानव के जितने शारीरिक, सांसारिक, मानसिक और आत्मिक दुख और ताप हैं यह सब अनसमझी, अज्ञानी और भ्रम के कारण हैं। जब तक किसी को कोई सच्चा और पूर्ण सतगुरु नहीं मिलता अर्थात किसी की समझ में पूरी बात अथवा रहस्य नहीं आता वह इस भवसागर तथा मन के चक्र से निकल ही नहीं सकता है। संसारी जीव संसार के झगड़े और झमेलों में फंसे हुए हैं और धर्म पन्थ के अनुयायी अपने मन के चक्कर में आये हुए हैं।

आज ही एक स्त्री मुझे मिली जिसकी पुत्री ने कुछ दिन हुये अपने आपको मिट्टी का तेल डाल कर भस्म कर लिया। यह पुत्री हुजूर बाबा जगतसिंह जी से दीक्षित थी। ज्ञात हुआ है कि बाबा जी उसको नाम दान नहीं देना चाहते थे परन्तु उसने हठ की साधन अभ्यास करने लगी। मस्तिष्क की दशा दूषित हो गई। छः वर्ष हुये जब मैं अमृतसर गया था तो वह एक कमरे में पाँच दिन से बेसुध पड़ी थी। मौज से उसको चेतनता आ गई। फिर मेरी ही सम्मति से उसका विवाह हो गया। फिर भी विभिन्न सत्संगों में जाती रहती थी। एक ब्रह्मचारी साधु ने उसको कहा कि अभ्यास किया करो। भगवान के दर्शन कर लो नहीं तो नर्क में जाओगी। उसके विचारों ने पलटा खाया। और वह रात दिन अभ्यास में रहने लगी।

मस्तिष्क का सन्तुलन ठीक नहीं रहा। हुजूर बाबा चरनसिंह जी के पास गई और कहा कि या तो ईश्वर के दर्शन करा दो नहीं तो के जीवित न रहूँगी। दो चार दिन के पश्चात अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डालकर जलकर मर गई।

तो अब सोचो कि उसकी इस भयङ्कर मृत्यु का उत्तरदायी कौन हैं? वही हैं जिन्होंने उसको ईश्वर दर्शन और नर्क में बासा पाने का विचार दिया था :—

पूरा सतगुरु ना मिला, सुनी अधूरी सीख।
स्वांग जती का पहन कर, घर घर माँगी भीख॥

अब दाता दयाल जी का उपरोक्त शब्द पढ़ो क्या वर्णन करते हैं :

"मैं नही राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं मानूँ।
मैं फकीर का नाम दिवाना, सबसे वढ़ कर जानूँ॥
जो फकीर मोहि दर्शन देवे, अपना भाग्य सराहूँ।
अपने तन की चाम की जूती, पग फकीर पहनाऊँ॥"आदि२

मुझे क्या मिला? दाता दयालजी फकीरों के सम्राट की दया दया से मुझे अब ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म, पारब्रह्म और अन्य किसी देवी देवता की आराधना का विचार नहीं सताता है और न मैं स्वर्ग नर्क अथवा आवागमन के भ्रम में आता हूँ। केवल उस जात मालिक, परमतत्व, सर्वाधार, अकाल पुरुष, जिसमें प्रत्येक समय मैं रहता हूं, उसका प्रेम अथवा लगन रहती है। सत्त पुरुष, राधास्वामी दयाल फकीरों के सरताज की वाणी है :—

गुरु ने अब दीना भेद अगम का। सुरत चली तज देश भरम का॥
बल पाया अब बिरह भरम का। भटकन छूटा देरो हरम का॥
वर्षन लागा मेघ करम का। संशय भागा जनम मरन का॥

तोड़ दिया सब जाल निगम का । सुख पाया अब हम दमदम का ।।
फल पाया आज हम सग दम का । भँवर हुआ मन सेत पदम का ।।
फूँक दिया घर लाज शरम का । काटा फदा नेम धरम का ।।
ज्ञान ध्यान वाचक हम छोड़ा । भक्ति भाव का पहना जोड़ा ।।
भक्ति भाव की महिमा भारी । जानेंगे कोई सन्त विचारी ।।
सत्त नाम सत पुरुष आपारा । चौथे माहि करें दरबारा ।।
सुरत शब्द मारग कोई पावे । सो हंसा चढ़ लोक सिधावे ।।
सो मारग अब राधास्वामी गाई । कोई कोई प्रेम भक्ति से पाई ।।

मैं अपने जीवन के आधार पर अपना निज अनुभव लेखों और सत्संगों में कहता रहता हूँ जिससे कि दूसरे भाइयों के भ्रम और संशय दूर हों । मैंने वह गुप्त रहस्य खोले हैं जिनका पहले केवल संकेत था ।

इस नाम के साधन में जो जन साधारण जपते रहते हैं बहुत त्रुटियाँ हो रही है । भ्रमवश प्राणी भ्रमी और उन्मत्त हो रहे हैं । यह नाम सतगुरु के आधीन है । "नाम रहे सतगुरु आधीना ।" इस लिये बार-बार 'पूरे गुरु को ढूँढ रे तेरे भले की कहूं' का आदेश है ।

वास्तविक नाम की प्राप्ति चौथे पद में होती है, और उनको प्राप्त होती है:– (१) जो ज़र (धन)जन (स्त्री) जमीन (भूमि) की लालसा को मौज पर छोड़ देते हैं ।

जिनको किसी पूर्ण पुरुष सतगुरु का संग मिला हुआ है और जो उसकी सेवा करते हैं । सतगुरु की सेवा केवल उनका संग और बात को समझना है ।

दर्शन करे वचन पुनि सुनें । सुन-सुन कर नित मन में गुने ।।
गुन गुन काढ़ लेहि तिस सारा । काढ़ सार तिस करे अहारा ।।

कर अहार पुष्ट हुआ भाई। जग भव भय सब गई गँवाई ॥
(राधास्वामी दयाल)

मौज की प्रेरणा से गुरु ऋण उतारने के लिये और जगत कल्याण के विचार से मैंने यह दाता दयाल महर्षिजी महाराज की आज्ञा और हुजूर साँवलेशाह व्यासवालों के आदेशानुसार कि फकीर निर्भय होकर काम कर जाओ। मैं तुम्हारा सहायक रहूँगा, सतसंग का काम किया है। यदि इस स्पष्ट वर्णन और सत्यता के व्यक्त करने के विचार से कोई मेरा आदरमान करता है तो दूसरी बात है किन्तु मैं संसार की आँखों में धूल डालकर अज्ञात और मूर्खता को फैलाकर अपनी मान प्रतिष्ठा अथवा धन द्रव्य आदि का इच्छुक नहीं हूं।

यदि सचमुच प्रकृति के मुझे इस कार्य के लिये बनाया है तो मुझे आशा है कि शीघ्र ही भारत में सत्यता और वास्तविकता का युग आयेगा और भारतवासी जो अपने भ्रम और अज्ञानवश बँटे हुये हैं उनमें मेल उत्पन्न होगा और सच्चे सुमिरन, ध्यान और भजन द्वारा जन साधारण मानसिक और आत्मिक शान्ति प्राप्त करेंगे। और यही मानवता है।

गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु, वेद पशु संसार।
मानुष सोही जानिये, जाहि विवेक विचार ॥

मेरा साहित्य जो नितान्त सरल, सुगम और बिना किसी रोचक और भयानक विचारों के हैं जन साधारण को तो सुख शान्ति देगा। यदि वास्तव में वह इस वस्तु के इच्छुक हों।

सबको राधास्वामी

मौज (ले० परम दयाल जी महाराज)

दर्द दिल रख कर के मजमून लिख रहा हूँ, अपने जैसों के लिये।
लुट न जायें भोले भाले लिख रहा हूं, इसलिये ।।
हुक्म है मुझको ऐसा, कर रहा हूँ काम जगत कल्याण का।
और मुझको गरज़ कुछ नहीं, दर्द है इन्सानी नस्ल के लिये ।।

आज अलीगढ़ से एक व्यक्ति ने लिखा है कि कोई महापुरुष अपने आपको राधास्वामी दयाल का अवतार प्रगट करते हैं आदि आदि। पढ़ा और आप ही हँसी भी आयी और खेद भी हुआ फिर दोनों दशायें समाप्त हो गयी।

मैंने अपनी समस्त आयु सत्त कबीर गुरु नानक और राधास्वामी मत अथवा अन्य सन्तों के मार्ग में जो सब एक ही हैं, इसमें व्यतीत की मैंने स्वयं सच्चा शिष्य और गुरु बनकर देख लिया और इस अनुभव के आधार पर साहस पूर्वक कहता हूँ कि हे संसार के भोले भाले जीवो कुछ होश करो। सन्तमत की वास्तविक शिक्षा को तो कोई देता नहीं है। यह सब काल और माया के स्वयं पुजारी हैं और दूसरों को अपनी उनमत्ता अथवा निज स्वार्थ या डेरे धामों और आश्रमों के लिये अज्ञान और भ्रम में रखकर बात का बतंगड़ बनाते हैं और अपना-अपना क्षेत्र बना लेते हैं। भली भाँति चड़ावा चढ़ता है और कुछ अज्ञानी जीव हिपनोटाइज़र होकर उनके जाल में फंस जाते हैं।

राधास्वामी मत, कबीर मत, अथवा सन्तमत की वास्तव में एक सच्ची स्वच्छ शिक्षा है जो जीव को सिन्ध गति से मिला देती है और साथ ही इस जीवन की यात्रा को सुखमय, शान्त-मय व्यतीत करने का रहस्य बताती है। इसके लिये पूर्ण पुरुष का सत्संग और साधन मुख्य है और बस। उस नोटिस में जो इस व्यक्ति ने मुझको भेजा है लिखा है कि राधास्वामी दयाल

का अवतार शाही चोले में आ गया है। मैं कहता हूँ।

राधास्वामी क्या है ? सुरत का अकाल पद अनाम पद से प्रकट होकर इन्द्री घाट तथा ऐड़ी से चोटी तक आकर फिर वापिस अपने देश में लौट जाने के समस्त खेल का नाम राधा-स्वामी है। इसको सार वचन पोथी का नाम माला स्पष्ट वर्णन करती है।

मैं जो इसका अर्थ समझता हूँ वह यह है कि अब शासन में सन्तमत की शिक्षा आयेगी। शिक्षा यह है कि सुरत प्रत्येक अवस्था में अडोल अचिन्त, निर्भय और निरवैर रहे। यह तभी हो सकता है कि शासन वाले स्वयं इस अवस्था में रहने वाले हों। अपने कार्य शासन से दूसरों को निडर भय और अचिन्त रख सकें।

मुझे वह नोटिस पढ़कर हंसी भी आयी वह इसलिये कि बात कुछ है और यह महात्माजन कहते कुछ हैं, क्योंकि मैंने गुरु बन कर देख लिया कि जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने ही विश्वास और श्रद्धा का फल है। वास्तव में मानव को देने वाला उसकी रक्षा करने वाला उसका अपना ही मन है। स्वामी जी महाराज ने माया सम्वाद में स्पष्ट वर्णन किया हैं।

काल ने रक्षक कला दिखायी। काल ने अपनी पूजा आप करायी। यह काल मानव का मन है। सन्तमत भी शिक्षा चौथे पद की है। खेद इस कारण हुआ कि सन्त साधू की महिमा अगम अपार है। सन्त वो है जो केवल शब्द और प्रकाश में रहता है। साधू वो है जिसका मन अपने नियंत्रण में है। किन्तु यहाँ यह महात्माजन मन के चक्र के अतिरिक्त जिसमें दूसरे फँसते रहें और कोई बात नहीं करते।

दोनों विचारों को त्याग दिया क्यों ? इसलिए जब सन्त कबीर अथवा राधास्वामी दयाल कह गये कि:—

"इस काल ने सब जग खाया सतगुरु देख डरी,
काल ने जग भरमाया मैं कासे कहूँ बखान ।"
जब ऐसा होता ही रहता है तो मुझे क्या ? होता रहे ।
हम सुखी हैं निर्बन्ध हैं राधास्वामी नाम से ।
तर गये संसार से और काम अपना कर चले ।।

चूँकि अपने कृतज्ञता थी राधास्वामी मत को और गुरु आज्ञा थी इसलिए भोले भाले भक्तों को कहता हूँ दीवानो क्यों त्रुटिपूर्ण गुरुत्व में लुटे जाते हो सचाई को समझो और बस । इन महात्माओ को कहता हूँ स्वामी जी की यह कड़ी स्मरण रखना ।

गुरुजी गुन्हेगार अति भारी ।
नरनारी बहुते बस कीने भोले भक्तन धोख दिया री ।

मैंने अपने सत्संगों में भली प्रकार इन सब बातों की व्याख्या की है । कैसे आश्चर्य की बात कि यदि राधास्वामी दयाल को दूसरे चोले में आना था तो उनकी अपनी मुक्ति नहीं हुई ।

यह जग ठग है ठगनी माया ।
कैसा प्रपंच पाखण्ड रचाया ।
मान प्रतिष्ठा रुपया कमाया ।
कैसा झूँठा जाल बनाया ।
जीव अज्ञानी धोखा खाया ।

दयाल नन्दू भाई जी महाराज का उपदेश ।

आये हैं बहरे जहाँ में, पूर्ण होने के लिये ।
पूरन पहले से हैं मुन्शी, वहम खोने के लिये ।
मिला गया गुरु का सहारा, ज्ञान का परिचय मिला,
सोंपी खिदमत सतगुरु ने मैल धोने के लिये ।
शिव गुरु के रूप हैं, कल्याणकारी हैं सदा,
आ शब तोष कहते है उनको, खुशी देने के लिये ।

कर तू खिदमत सतगुरु की, वहम दिल से दे निकाल,
खुद ही करता धरता वो हैं, परिचय देने के लिये।
मिल गया हमको सहारा, सतगुरु की जात का,
पंडित जी पूरन पुरुष हैं, ज्ञान देने के लिए।
छोड़ दे वहमो शिकायत, शुक्र से दिन काट अब,
मुशकिले आसान होंगी, काम करने के लिये।
काम करतू काम करतू, काम से जीवन बने,
काम में खुशहाली रहती, भेद पाने के लिये।
मुशकिले आसान होंगी, दिक्कतें आसान हों,
खुशदिली से काम कर, तू नाम पाने के लिये।
नाम जिसको मिल गया, रोना हुआ उसका खतम,
रुद्र से वह शिव बना, कल्याण पाने के लिये।
बेफ़िकर मुन्शी तू रह, तुझको मिला है सतगुरु,
दुख दर्द जाते रहे, धुरधाम पाने के लिये।
जिसको दर्शन इस जगह है उसे दर्शन है मुदाम,
आँख अपनी खोल, मुन्शी दुख मिटाने के लिये।
तेरा सतगुरु हर जगह है, अन्तर में है बाहर में है,
आता है शिव रात्रि पर, अनहद सुनाने के लिये।
आँख खुलती ही नहीं, किससे कहैं कैसे कहैं,
सुनने वाला कौन है, परतीत लाने के लिये।
राधास्वामी आये जग में, संत का औतार धार,
मुशकिलें आसान कर दीं, ज्ञान पाने के लिये।
जगत का कल्याण करता, दुख दर्द हरता हैं वो,
सतगुरु का रूप है, इन्साँ बनाने के लिये।
वक्त तुमको है मिला, दर्शन करो नित सतगुरु,
पालो भक्ति ज्ञान शक्ति, निज धाम पाने के लिये।
कहता हूँ मैं बात सच्ची, माने न माने कोई,

काम मेरा बन गया है, विश्राम पाने के लिये।
नन्दू को आनन्द मिला, अज्ञान सारा मिट गया,
बन्द होती है जुबां, निज धाम पाने के लिये।
राधास्वामी नाम लो, चरनों में गुरु के बैठ कर,
ज्ञान गुरु का रूप है, आनन्द पाने के लिये।

वार्षिक निवेदिका राधास्वामी सत्संग हनमकुन्डा नवम सन्त सम्मेलन सन् १९६३। ठाकुर शङ्करसिंह मंत्री की ओर से

निराकार आकर सब, निर्गुन और गुनवंत।
है नाहीं सूँ रहित है, सहजो यों भगवन्त ।।

उस परम तत्व परम आधार मालिके कुल का कोट-कोट धन्यवाद है कि यह नवम् सन्त सम्मेलन अत्यन्त हर्ष हुल्लास और आनन्द के साथ समाप्त हुआ है।

ज्योति स्वरूपी आत्मा, घट-घट रहे समाय।
परम तत्व मन भावना, नेक न इत उत जाय ।।

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूरन धनी हुजूर दाता दयाल जी का वार्षिक उत्सव बसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर मनाया गया और मनुष्य बनो का झण्डा फहराया गया।

दया दान और दीनता, दीना नाथ दयाल।
हृदय शीतल दृष्य सम, निरखत करें निहाल ।।

हमारी प्रार्थना पर हुजूर परम दयाल जी महाराज होशियारपुर (पंजाब) से और दयाल हुजूर नन्दू भाई जी महाराज निजामाबाद (दक्षिण) से इस सन्त सम्मेलन के उत्सव में पधारकर उन्होंने भय ताप से पीड़ित जीवों को उद्धार का मार्ग बतलाया।

साध संग संसार में, दुर्लभ मनुष्य शरीर।
सतसंगत से मिटत हैं, त्रिविध ताप की पीर ।।

इस वर्ष ३०-१-६३ और ३१-१-६३ जनवरी को तथा

१-२-६३ फरवरी को तीन दिन तक प्रातः और सायंकाल शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विषय पर वचन होते रहे। अपने को सुधारने और इसी जीवन में आदर्श को प्राप्त करने की सुगम रीति समझाई गई।

सत संगत में चाँदना, सकल अंधेरा और।
सहजो दुर्लभ पाइये, सत संगत में ठौर॥

सहस्रों भ्रम वालों ने सतसंत से लाभ प्राप्त किया। जिन्होंने श्रद्धा और हित-चित से सुनकर विचार किया, सत्संग के यह वचन अवश्य ही उनके जीवन में परिवर्तन लायेंगे।

साध संग तीरथ बड़ा, ता में नीर विचार।
सहजो नहीं ये पाइये, मुक्ति पदारथ चार॥

वह पुरुष धन्य हैं और संसार से बड़े सौभाग्यशाली हैं जिनको सन्तों का सत्संग प्राप्त होता है।

कबीर संगत साध की, साहेब आवें याद।
लेखे में बोही घड़ी, बाकी के दिन बाद॥

सत्संग स्वभाव और आचार और प्रकृति के सुधार का सबसे उत्तम उपाय है किन्तु बिना मालिक की अपार दया के सन्तों की शरण प्राप्त नहीं होती। "बिन हरि कृपा मिलहिं नहीं सन्ता।"

जो आवे सत्संग में, जाति वरन कुल खोय।
सहजू मैल कुचेल जल, मिले सो गंगा होय॥

न यहाँ यम, नियम करने की आवश्यकता है और न शम, दम साधने की जरूरत है। जो नमक की खान में गया वही नमक हो गया।

लाली अपने लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन में गई, मैं भी हो गई लाल॥

मालिक का निवास स्थान बैकुण्ठ अथवा स्वर्ग लोक नहीं

है। वह सन्तों के हृदय में बसता है। इस कारण जो सन्तों व सत्संग करते हैं वे धन्य हैं।

मन मेरा पंछी भया, उड़कर चला आकाश।
स्वर्ग लोक खाली पड़ा, साहिब सन्तन पास ।।

सन्तों के दर्शन का फल तत्काल, उसी क्षण मिलता है और मनुष्य के सुभाव में परिवर्तन आने लगता है।

सहजो संगत संत की, काग हंस हो जाय।
तज के भक्ष अभक्ष को, मोती चुन-चुन खाय ।।

सत्संग में काल और माया का प्रश्न नहीं रहता। मनुष्य सत्संग में जाकर अपने आपको भुला देता है। वहाँ का वातावरण तुमको आत्मिक रूप में सभ्य और सुशील बना देगा। केवल सावधान होकर चित्त से वचन सुनते रहो। तुमको मन इन्द्रियों के रोकने की शक्ति आती जायेगी।

कलि केवल संसार में, और न कोउ उपाय।
साध संग हरि नाम बिन, मन की तपन न जाय ।।

गत नौ वर्ष से संत सम्मेलन का शुभ उत्सव मनाने के कारण श्रोताजनों का हृदय सत्संग के मधुर वचनों से प्रफुल्लित हो गया। श्रद्धा प्रेम और विश्वास में वृद्धि होकर अपने जीवन को सुधारने और आशा रहित बन आदर्श पर पहुँच कर जीवन मुक्त दशा प्राप्त करने का शुभ अवसर मिला।

जब लग चावल धान में, तब लग उपजे आय।
जग छिलके को तज निकस, मुक्ति रूप होइ जाय ।।

सत्संग में जाकर गुरु और साधु की सेवा करने से, मालिक के प्रेम को महिमा गाने से, मालिक का ध्यान करने से, मन वचन कर्म से शुद्ध हो जाओगे। फिर आप ही आप बिना किसी कठिन साधन के यम नियम वाले बनते जाओगे।

दया नाव हरि नामकी, सतगुरु खेवन हार ।
साधु जन के संग में, तरत न लागे बार ।।
एक घड़ी का मोल ना, दिन का कहा बखान ।
सहजो ताहि न खोइये, बिना भजन भगवान ।।

यदि किसी मनुष्य को संत अथवा सतगुरु मिल भी जाये किन्तु जब तक वह सतगुरु के आदेश या आज्ञा का पालन नहीं करता आत्मिक उन्नति में सफल नहीं हो सकता ।

सतगुरु मिले तो क्या भया, घट नहीं प्रेम परतीत ।
अन्तर कोर न भीजई, ज्यों पत्थर जल भींत ।।

जिन सत्संगी भाइयों ने सन्त सम्मेलन में निष्काम सेवा करके हमारा हाथ बटाया है हम उबके भी आभारी हैं । सत्संग एक महान आत्मिक पाठशाला है जहाँ मनुष्य को क्रियात्मिक पाठ पढ़ाये जाते हैं । उससे मन की गढ़त होती रहती है और वचन सुनने से श्रवण, मनन और निध्यासन होता रहता है ।

वही एक व्यापक सकल, ज्यों मनका में डोर ।
थिर चर कीट पतंग में, दया न दूजा और ।।

परम आधार परम तत्व स्वरूप हुजूर दाता दयाल के चरन कमलों में हमारी कर बद्ध यह प्रार्थना है कि सबका शुभ हो और सारे जगत का कल्याण हो ।

अन्तरयामी एक तुम, सब जग के आधार ।
जो तुम छोड़ो हाथ से, कौन सम्हारन हार ।।

—०—

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान		अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि		मासिक
३—मुद्रक का नाम		श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता		भारतीय
ख—पता		शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। (उत्तर प्रदेश)
४—प्रकाशक का नाम		श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता		शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
५—सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनाङ्क १५ नव०, १९८८

सुधा मित्तल

प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG. 28

मिलने का पता :—
'मनुष्य बनो' कार्यालय
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़—२०२००१ (उ० प्र०)

अवैतनिक सहायक सम्पादक :
महेशचन्द्र मीतल
सम्पादक, व्यवस्थापक व प्रकाशक :
श्रीमती सुधा मीतल

ग्राहक संख्या— 1177.

श्रीमान् Hanumant[illegible] [illegible]
Zila Parishad High School.
Madnoor. Nizamabad. AP

मुद्रक : श्रीमती सुधा मीतल, दातादयाल प्रिंटर्स, लेखराजनगर, अलीगढ़।